"बहुसंस्कृतिवाद और आतंकवाद से समाज का बदलता दृष्टिकोण"

असि. प्रोफेसर **सन्तोष कुमार मौर्य**
समाजशास्त्र
S.K.J.P.G. College mangalpur kanpur-D
Aff. By C.S.M.U. Kanpur (U.P.)

सारांशः– बहुसंस्कृतिवाद का अर्थ जब किसी समाज में एकाधिक संस्कृतियों के लोग साथ–साथ रहते है तथा उनके इस प्रकार के सहअस्तित्व का समर्थन भी किया जाता है, तब यह स्थिति बहुसंस्कृतिवाद के नाम से जानी जाती है। भारत इसका अत्युन्तम उदाहरण है।

मुख्य शब्दः– प्रकार्यवाद, संस्कृति, बहुसंस्कृति, सभ्यता, समाज, उद्विकास।

समाजशास्त्रीय और समाजसुधारक जिस समतावादी समाज की संकल्पना लेकर आगे बढ़ते हैं। आज बहुद्धा समाज में देखने को मिलता है परंतु आज भी समाज में असमानता और निराशा देखने को मिल जाती है। समाज में सभी के पास अधिकार, कार्य, स्वतंत्रता, समानता प्राप्त हो, इसके लिए विभिन्न आंदोलन, क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का चक्र चलता रहता है।

विश्व पटल पर समतावादी दृष्टिकोण बहुत हद तक सफल हुआ है जाति–पाती, धर्म आधारित सामाजिक विभेदीकरण और सामाजिक स्तरीकरण के विरुद्ध खड़ी होती वैचारिकी इन कुंठाधारी दीवारों को गिराने के लिए प्रतिबद्ध है।

समाजशास्त्रीय ने यह बीड़ा खुद उठाया और विश्व में जातीय, धार्मिक, जैविक विभिन्नता के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को मिटाने का कार्य किया और जातीयता की संकल्पना को जन्म दिया अर्थात गोरे, काले, लंबे, छोटे, मोटे, पतले आकार के लोगों के प्रति जो दुयवहार समाज में व्याप्त था, दूर करने का प्रयास किया। इसी विचारधारा की शुरुआत बहुसंस्कृतिवाद को जन्म दिया।

बहुसंस्कृतिवाद का अर्थ जब किसी समाज में एकाधिक संस्कृतियों के लोग साथ–साथ रहते है तथा उनके इस प्रकार के सहअस्तित्व का समर्थन भी किया जाता है, तब यह स्थिति बहुसंस्कृतिवाद के नाम से जानी जाती है। भारत इसका अत्युन्तम उदाहरण है जहां विभिन्न मत–मतान्तर और प्रजातिक विशेषताओं वाले समुदायों को भारतीय समाज की महत्व परम्पराओं में सहभागी रहते हुए अपनी–अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं के पालन करने की स्वच्छंदता है।[1]

भारतीय समाज में अन्य सभ्यताओं की तुलना में परिवर्तन धीरे हुए है। ''सांस्कृतिक विकास की प्रत्येक अवस्था अग्रिम अवस्था में परस्पर व्याप्त रहती थी, इसलिए किंचित निरन्तरता और स्थायित्व बना रहता था।'' क्षेत्रीय भिन्नताओं और विदेशियों के साथ निरन्तर सम्पर्क रहने के उपरान्त ही सिंधु सभ्यता अपने

स्वरूप में मुख्यतः ''भारतीय'' है। इस मत के बारे में वैदिक साहित्य, पुराणों, जैन व बौद्ध धर्म पुस्तकों में वर्णन मिलते है।

सामाजिक परिवर्तन क्यों और कैसे होता है, यह समाजशास्त्रियों के चिंतन की एक प्रमुख विषय–वस्तु रहा है। प्रारम्भ में तो सामाजिक परिवर्तन दार्शनिकों की विषय–वस्तु रहा पर आज दार्शनिकों का स्थान समाजशास्त्रियों ने ले लिया है। अधिकांश पश्चिमी समाजशास्त्रियों एवं मानवशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या अपने–अपने ढ़ग से की है। सामाजिक प्रक्रियाओं के विश्लेषण के लिए प्रकार्यवादी सिद्धान्त भी एक प्रमुख सिद्धान्त है लेकिन इस सिद्धान्त से मात्र इतनी ही जानकारी मिलती है कि समाज के विभिन्न अंग किस प्रकार एक–दूसरे से अर्थ पूर्ण ढ़ग से जुड़े हुए है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं का जितना अच्छा विश्लेषण उद्विकासीय, चक्रीय एवं संघर्ष–सिद्धान्तों के जरिए होता है उतना प्रकार्यवादी सिद्धान्तों के माध्यम से नही होता है।

जब विभिन्न समाजों की ओर गौर किया जात है, तो पता चलता है कि विश्व के विभिन्न समाज विकास के अलग–अलग स्तरों पर खड़ा है। आज यदि विश्व के कुछ समाज शिकार एवं भोजन संग्रह की स्थिति में है, तो दूसरी तरफ पाश्चात्य देश विकास की चरम सीमा पर है। इन दो सीमाओं के बीच कुछ समाज पशुपालन स्तर में है, तो कुछ समाज उन्नत कृषि स्तर में है समाज के विकास के विभिन्न स्तर होते है, उसे एक–दूसरे से अलग करने के लिए लोगो ने विभेदीकरण जैसी अवधारणा का प्रयोग किया। उन लोगों का मानना है कि प्रारम्भिक स्तर में समाज काफी सरल था और उसमें कम से कम विभेदीकरण पाया जाता था। पर जैसे–जैसे समाज सरलता से जटिलता की ओर बढ़ा वैस–वैसे विभेदीकरण भी जीवन के विभिन्न क्षेत्र में बढ़ता गया।[2]

समाजशास्त्रियों ने समाज का प्रारूप प्रारंभिक अवस्था में एकजुट करने का प्रयास किया। यह प्रक्रिया प्रकार्यवाद के नाम से जानी गई। प्रकार्यवाद वह विचारधारा है जिसमें समाज के विभिन्न इकाइयों का एक दूसरे से संबद्ध व्यवस्थित क्रम जुड़ी हुई है एक व्यवस्था के रूप में परिभाषित होती है। जहां पर स्तरीकरण, विभेदीकरण को प्रकार्य के रूप में देखा जाता है। प्रकार्यवाद की नींव रखने में कुछ समाज शास्त्रियों का उल्लेखनीय योगदान हैः–

हर्बर्ट स्पेन्सर का सबसे महत्वपूर्ण योगदान सामाजिक उद्विकास का है जिसमें उसके सिद्धान्त का मूल–आधार जीवशास्त्रीय उद्विकास को माना है उद्विकास के संदर्भ में हर्बर्ट स्पेन्सर ने स्वरूपों का परीलक्षित करने का प्रयास किया है जिसमें समाज के विकास का क्रम चाहे वह जीवशास्त्रीय हो चाहे वह प्राकृतिक हो या फिर सामाजिक हो उसमें कही न कही उद्विकास के स्वरूप सरलता से जटिलता की तरफ निश्चिता से अनिश्चिता की तरफ विकास एक निश्चित दिशा में पाया जाता है।

उद्विकास विकास का वह क्रम है जिसमें विकास एक निश्चित दिशा में सरलता से जटिलता की तरफ वह क्रम है जिसके अन्तिम अवस्था का स्वरूप अनिश्चित होता है।[3]

दुर्खीम ने अपनी पुस्तक **'द डिविजन ऑफ लेवर इन सोसायटी'** में हर्बर्ट स्पेंसर की कटु आलोचना की है स्पेंसर जब जैविकीय व्यवस्था की तुलना सामाजिक व्यवस्था से की, तो दुर्खीम ने यह स्वीकार नहीं किया। दुर्खीम तो समाज को एक वास्तविकता मानते है। इनकी 'डिवीजन ऑफ लेबर' पुस्तक का मुख्य उद्देश्य सामाजिक तथ्यों का प्रकार्यात्मक विश्लेषण करना है। वे मानते है कि समाज की कुछ प्रकार्यात्मक पूर्व आवश्यकता होती है आवश्यकताओं में सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता सामाजिक व्यवस्था का बना रहना है। वे प्रश्न करते है कि व्यक्तियों को किस प्रकार एकीकृत करके समाज की व्यवस्था में रखा जा सकता है? इसका उत्तर उनके अनुसार सर्वसम्मति है। इसी सर्वसम्मति को उन्होंने सामूहिक चेतना यानि समाज द्वारा स्वीकृत सामान्य विश्वासों और संवेगों में रखा है। जब तक समाज के सभी सदस्य बुनियादी नैतिक मुद्दो पर सर्वसम्मति नहीं रखते, सामाजिक सुदृढ़ता नहीं आ सकती है। इसके अभाव में न तो लोगों में सहयोग होगा और न पारस्परिकता। यह सामूहिक चेतना ही समाज के सदस्यों पर दबाव डालती है और इस प्रकार समाज की पूर्व आवश्यकताएं पूरा होती है। आगें चलकर दुर्खीम कहते है कि प्रत्येक व्यक्ति में समाज का दर्शन होता है।

उपरोक्त तर्को के आधार पर दुर्खीम ने धर्म का प्रकार्यात्मक विश्लेषण किया है। धर्म में वस्तुए पवित्र इसलिए है क्योंकि समाज उन्हे पवित्र माना है। दुर्खीम का प्रकार्यवाद इस भांति सामाजिक तथ्य से जुड़ा हुआ है। सामाजिक तथ्य ही जिसमें सामूहिक चेतना है समाज के विभिन्न व्यक्तियों को एक सूत्र में बाधता हैं और यही प्रकार्यवाद है।[4]

सामाजिक व्यवस्था सिद्धान्त के प्रणेता **टालकाट पारसंस** है उन्होंने अपने तात्विक दृढ़ विश्वास के साथ यह कहा है कि यह संसार है, पूर्ण है और इसे इसकी एकता में सुरक्षित रखने के लिए सभी प्रयास किए जाने चाहिए। वे आग्रह पूर्वक कहते है कि यह संसार अभिन्न है, इसमें एकत्व है और इसलिए इसकी अखण्डता को बनाए रखना अनिवार्य है। पारसंस का सम्पूर्ण सोच इस बात पर आधारित है कि सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न भाग एक दूसरें से जुड़े हुए है। उनमें अन्तनिर्भरता है।

टालकाट पारसंस के सिद्धान्तीकरण की सामाजिक व्यवस्था ऐसी है जो किसी भी समाजशास्त्री जांच के लिए मुख्य स्थान ग्रहण करती है। लेकिन सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन सांस्कृतिक व व्यक्तित्व व्यवस्था के बिना नहीं हो सकता।[5]

सामाजिक तथा सांस्कृतिक संरचनाओं के विविध तत्वों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पहला तो सांस्कृतिक लक्ष्य और दूसरा संस्थागत आदर्श–नियम। ये सांस्कृतिक लक्ष्य सामान्य मानवीय भावनाओं तथा प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते है और उन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सबकों प्रयत्नशील रहने का निर्देश देती है। साथ ही प्रत्येक सामाजिक संरचना के अन्तर्गत इन सांस्कृतिक लक्ष्यों की प्राप्ति करने के लिए कुछ निश्चित मान्य और स्थापित प्रणालिया होती है। इन्ही को हम संस्था कहते है।

मर्टन के अनुसार, सामाजिक संरचना के इन दो पहलुओ अर्थात् सांस्कृतिक लक्ष्य तथा संस्थागत आदर्श–नियमों में एक क्रियात्मक सन्तुलन तब तक ही बना रहता है जब तक कि सांस्कृतिक लक्ष्यों की प्राप्ती के हेतु पर्याप्त व सामान्य संस्थागत प्रणालियां भी समाज के सदस्यों के लिए उपलब्ध हों।[6]

उपरोक्त विचारों ने जिस विचारधारा को अपनाया एकीकरण का प्रयास किया, समाज को एकता के रूप में बांधने का प्रयास किया। प्रकार्यवाद के रूप में सामने आया इसमें बहुत सी ऐसी कमियां रही जिससे समाज की हर इकाई संतुष्ट नहीं हो सकी। खास तौर से वे इकाइयां जो अपनी संक्रमण अवस्था में थी या सामाजिक व्यवस्था के निचले पायदान पर रही क्योंकि इनके लिए व्यवस्था को बनाए रखने और परंपरागत कार्य एवं जीवन शैली को अपनाने पर जोर दिया गया। जो इनके लिए अवसर संकुचित करती है।

प्रकार्यवादी समाजशास्त्रियों का कहना है कि सामाजिक संरचना के सभी तत्व एक–दूसरे से सुसंगत ढ़ंग से एकीकृत होते है, लेकिन यथार्थ में यह कोई जरूरी नही है कि सामाजिक संरचना के सभी तत्व हमेशा सुसंगत ढंग से जुड़े हो। समाज के विभिन्न अंगो में प्रायः तनावपूर्ण समस्याएं बनी रहती है इसलिए तो सामाजिक व्यवस्था को तनाव प्रबन्धन का भी कार्य करना पड़ता है।

स्पेन्सर ने प्रकार्यवादी विश्लेषण को अति सरल बना दिया है उन्होंने सावयवी संरचना एवं सामाजिक संरचना को एक समान मान लिया है, जो सही नही है। **आर0 के0 मर्टन** के प्रकार्यवादी सिद्धान्त में भी प्रकार्य एवं दुष्प्रकार्य के बीच अन्तर अधिक स्पष्ट नहीं है। टालकांट पारसंस के सिद्धान्त में तो सामाजिक संरचना एवं सामाजिक व्यवस्था में अन्तर बिल्कुल स्पष्ट नहीं देता है पारसंस का सिद्धान्त वस्तुतः बहुत ज्यादा अस्पष्ट एवं जटिल है। पारसंस की 1979 में मृत्यु के बाद कुछ लोग फिर से उनके विचारों में रूचि लेने लगे और वे परम्परागत आलोचनाओं का जवाब देने का प्रयास कर रहे है। इस नये आन्दोलन ने समाजशास्त्र में नव–प्रकार्यवाद (Neo- Functionalism) को जन्म दिया है।

प्रकार्यवाद के आधार पर दो या दो से अधिक समाजों का तुलनात्मक अध्ययन सम्भव नहीं है। क्योंकि संरचनात्मक संदर्भ को गौण करके केवल दो इकाईयों के प्रकार्यो की तुलना मात्र से हम यथार्थ का अध्ययन कभी नही कर सकते है। इसी तरह प्रकार्यवादी व्याख्या में कारणामक व्याख्या (Causal

Explanation) का अभाव है। प्रकार्यवाद की एक सीमा यह भी है कि वह उल्टी मान्यता पर आधारित है इसके अध्ययन में पहले प्रकार्य और बाद में इकाई है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत परिणाम के माध्यम से कारण ही व्याख्या होती है इसलिए आलोचकों ने इस सिद्धान्त को प्रयोजनमूलक (Teleological) सिद्धान्त कहा है।

प्रकार्यवाद की एक मुख्य सीमा यह भी है कि समाज की इकाईयों के प्रकार्य का अध्ययन उनके संरचनात्मक संदर्भ से पृथक रख कर किया जाता है, जबकि अधिकांश आधुनिक समाजशास्त्री संरचनात्मक संदर्भ (Structural Reference) को गौण करके इकाइयों के प्रकार्यो का अध्ययन अवैज्ञानिक एवं अधूरा करके देखते है। प्रकार्यवादी सिद्धान्त से मात्र संरचना में परिवर्तन (Change in Structure) का ज्ञान होता है। इससे संरचनात्मक परिवर्तन (Structural Change) का ज्ञान नहीं होता है। संघर्षवादी चिन्तक जिस संरचनात्मक परिवर्तन की बात करते है उसका ज्ञान हमें प्रकार्यवादी सिद्धान्त के आधार पर नही हो पाता है।[7]

हाल में समाजशास्त्र में कुछ नये सिद्धानों का प्रादुर्भाव हुआ है। ऐसा सोचा जाने लगा है कि क्लासिकल और आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धान्त समकालीन समाज के विश्लेषण में खरे नहीं उतरते। ये सिद्धान्त समय की कसौटी पर टिक नहीं पा रहे है। समाज चाहे यूरोप–अमेरिका का हो या एशिया का पिछले एक–दो दशकों में ही इतना बदल गया है कि यदि सिद्धान्तों में संशोधन नहीं किया गया तो वे देखते ही देखते खारिज हो जायेगा। दूसरा किसी भी विज्ञान में नव–सिंद्धान्तों का निर्माण एक बात तो स्पष्ट करता है कि यह विज्ञान अभी जीवन्त है, उसमें गतिशीलता है। समाजशास्त्र में क्लासिकल सिद्धान्तों को आज उस आदर के साथ नहीं देखा जाता जो आदर आज से पचास वर्ष पहले था। सब कुछ बदल गया है।

सैद्धान्तिक परिवर्तन की यह चुनौती क्लासिकल और आधुनिक सिद्धान्तों में प्रकार्यवाद और मार्क्स के बाद भी सामने आयी। इस चुनौती ने नव–प्रकार्यात्मक सिद्धान्त को विकसीत किया। ई0 1960 के पहले दशकों में (यूरोप को छोड़कर) सारा संसार में प्रकार्यवाद एक लोकप्रिय सिद्धान्त था। सूर्योदय से सूर्यास्त तक यानी सारी दुनियां में सिद्धान्तों के नाम पर प्रकार्यवाद ही था।

नव–प्रकार्यत्मक और नव मार्क्सवादी सिद्धान्त आज के विश्लेषण में कितने प्रासंगिक है। यह विवादात्मक मुद्दा है। **जेफ्रे अलेक्जेंडर**, **रिचार्ड मंच** और **निक्लास लूहमान** तथा अन्य समाजशास्त्रियों ने प्रकार्यवाद की कतिपय कमजोरियों की पहचान की है और इसे इसके नये अवसर में रखा है। नव–प्रकार्यवाद पर बहुत कुछ लिखा गया है। बहुत कुछ कहा गया है। बहुत थोड़े में हम कहेंगे कि

नव–प्रकार्यवाद पारसंस का जर्मन निर्वचन है। अलेक्जेंडर इसे क्लासिक समाजशास्त्रीय संदर्भ में देखते है। रिचार्ड मंच पारसंस के क्रिया सिद्धान्त का नया निर्वचन करते है लूहमान, पारसंस की सामाजिक व्यवस्था की नये संदर्भ में व्याख्या करते है। कुल मिलाकर नव प्रकार्यवाद पारसंस को नये सिरे से देखते है उसका नया निर्वचन करते है, उसकी खोज करते है। नव–प्रकार्यवादी लेखक दूसरे प्रकार्यवादियों को नहीं छूते। बस उनका प्रारम्भ पारसंस है और अंत भी पारसंस ही इसी कारण यह भी कहा जाता है, कि नव–प्रकार्यवादी सिद्धान्त वही पुरानी शराब है वही नशा और वही रंग है। यदि कुछ बदला है तो बोतल। पहले इसे प्रकार्यवाद कहते थे और अब नव–प्रकार्यवाद।[8]

ऐसे व्यक्तियों के समूहों में हिंसात्मक विरोध को वर्ग संघर्ष माना जाता है जो न्यूनाधिक मात्रा में स्थायी रूप से एक–दूसरे से जुड़े होते है। तथा जिन्हें सार्वजनिक रूप से उनके प्रशिक्षण सुविधाओं तथा प्रस्थिति के आधार पर भिन्न माना जाता है। ऐसे समूहों की भिन्नता उनके अनुभव, धन–सम्पदा, शिक्षा, राजनीतिक प्रभाव, जीवन शैली, आराम अथवा सौन्दर्यात्मक रूचि आदि में स्पष्ट झलकती है सामान्यतः ये समूह प्रगतिशील तथा रूढ़िवादी जैसे सामान्य विरोधी दलो में बटें होते है।

निम्न एवं दलित आर्थिक समूह उच्च एवं सुविधाभोगी समूहों के शोषण एवं प्रभुत्व से मुक्त होने तथा उच्च वर्गो द्वारा अपने प्रमुख एवं सुविधाओं को बनाये रखने के ऐतिहासिक संघर्ष निरन्तर होते रहे है। कार्ल–मार्क्स के अनुसार, वर्ग–संघर्ष अपरिहार्य समाजों में आर्थिक संगठन के स्वरूप के कारण उत्पन्न होता है। इस प्रकार का संघर्ष प्रत्येक युग में धनवान (सम्पत्ति सम्पन्न) एवं निर्धन (सम्पत्तिहीन) के बीच विद्यमान रहा है। प्राचीन काल में यह संघर्ष स्वामी और दास के बीच, मध्यकाल में सामन्त और खेतिहर मजदूर के बीच और आधुनिक औद्योगिक समाजों में पूंजीपति और औद्योगिक श्रमिक के मध्य निरन्तर बहु–प्रसिद्ध कृति 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टों' की शुरूआत इन शब्दों से की है, ''आज तक के विद्यमान सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है।''[9]

प्रघटनाशास्त्र का कहना है कि समाज की वास्तविकता को जानने का तरीका केवल एक है और वह है व्यक्ति का अनुभव दुनिया में जो कुछ भी वास्तविक है उसे व्यक्ति अपनी इन्द्रियों और मानसिक प्रक्रियाओं के द्वारा अनुभव करता है। दूसरे लोगो का अस्तित्व उनके मूल्य और मानक और भौतिक वस्तुओं के अस्तित्व को लोगो की चेतना और जागृति द्वारा ही जाना जा सकता है। इस यथार्थ को समझने में मनुष्य की चेतना और उसके मस्तिष्क की क्रियाशीलता महत्वपूर्ण है।

प्रघटनाशास्त्र हमसे एक आग्रह करता है कि हम उन सब बातों को स्वीकार न करे जिन्हें हमने विवाद से पढ़े और हर तरह से स्वीकार कर लिया है होना यह चाहिए कि हम दुनिया की वस्तुओं को किस तरह से देख रहे है, देखना बन्द करे। समाज कुछ इस तरह चलता है कि हमारे दिन–प्रतिदिन काम में

आने वाली वस्तुए, खान–पान, कपड़ा–मकान तीज त्यौहार, समाज द्वारा बनायी गयी धरोहर के रूप में हमारे जीवन में है। जो कुछ हम करते है, मानते है वह सीखी हुई संस्कृति है क्योंकि यह पीढ़ी–दर–पीढ़ी से हमारे पास आयी है। हम कमीज पहनते है, जूते पहनते है और इसी तरह शाकाहारी भोजन करते है, राखी–दीवाली मनाते है, संस्कृति के ये सब तत्व हमारी विरासत है। प्रघटनाशास्त्र का आग्रह है कि जो कुछ हमारी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विरासत है उसे ज्यो का त्यो स्वीकृत नही करना चाहिए। प्रघटनाशास्त्र तो इस सम्पूर्ण विरासत इससे जुड़ी हुई मान्यताओं को आलोचनात्मक दृष्टि से लेता है। इन्हें स्वीकारने की चुनौती देता है। जहां प्रकार्यवादी समाज के मानक और मूल्यों को स्वीकार करना आवश्यक समझते है, उनके अस्तितव के प्रति प्रश्न चिन्ह नही खड़ा करते, वहां प्रघटनाशास्त्र का संदर्भ इन सब मान्यताओं को चुनौती देता है। सच्चाई यह है कि प्रघटनाशास्त्र उन प्रश्नों को पूछता है जिन्हे सामाजिक व्यय हमारी सांस्कृतिक–सामाजिक विरासत के अंग बन गये है। जो हमारी दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों को संचालित व नियंत्रित करते है।[10]

समाज में प्रकार्यवाद का उत्थान और पतन का अनुभव नवप्रकार्यवाद, संघर्षवाद ,प्रघटनाशास्त्र और लोकविधिविज्ञान के माध्यम से करने का प्रयास किया। इसके दुष्परिणाम भी सामने आए समाज की अधिकांश इकाइयां जिसमें धर्म, जाति, संप्रदाय, विचारों की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की आजादी एवं जीवन शैली,प्रजातियों का महत्व इत्यादि को दर्शाता है। परिणाम यह हुआ कि ऐसे संप्रदाय या धर्म स्वतंत्रता के बजाय स्वच्छंदता की तरफ आगे बढ़ने लगे। यह प्रवृत्ति निरंतर बनी रही और समाज में एक विशेष संप्रदाय में कट्टरता की भावना आने लगी और विश्व पटल पर पूछ के बजाय दमन के अपनी विचारधारा को रोकने का प्रयास प्रारंभ हुआ।

कट्टरवाद उदारवाद का विरोधी विचारक है और कभी–कभी बहुलवाद के प्रति हिंसात्मक मनोवृत्ति की ओर संकेत करता है, पाकिस्तान, सऊदी अरब, ईरान आदि देश अधिक कट्टरवादी माने जाते है। भूमण्डलीय सन्दर्भ में धर्म निरपेक्षीकरण की धारणा के लिए उदारवाद और कट्टरवाद के बीच अन्तर करना सार्थक है। पश्चिमी समाज धर्मनिरपेक्ष हो गया है। (चर्च के अधिकारों में कमी आने के संदर्भ में) कभी मुस्लिम देशों में इस्लामिक कानूल ही नागरिक व धार्मिक जीवन को संचालित करते है। परन्तु कुछ ऐसे देश है जहां धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं यहा तक कि राजनीतिक बहुलवाद भी मौजूद है। काफी मुसलमान जो इस्लामी परम्पराओं का निर्वाह जारी रखे हुए है, कट्टरवादी ही बने हुए है, जो उन्हे आधुनिकता स्वीकार करने में रोकता है।

धर्म पर आधुनिकता का क्या प्रभाव पड़ा है इस पर पीटर बर्गर का विचार है कि बढ़ती हुई सामाजिक एवं भौगोलिक गतिशीलता तथा आधुनिक संचार पद्धति के विकास ने व्यक्ति को धार्मिक प्रभावों की विविधता के समक्ष असहाय बना दिया। इसलिए उन्होंने एक–दूसरे के धार्मिक विश्वासों को सहन करना

सीख लिया है। इसलिए लोग अब नये विचारों और नये परिप्रेक्ष्यों की संस्कृति की खोज के लिए स्वतन्त्रता का अनुभव करते है। बहुत से ऐसे देश है कि शिक्षित एवं आधुनिकता की ओर उन्मुख मुसलमानों ने धर्मोन्मुख प्रतिमानों में परिवर्तन के लिए खोज शुरू कर दिया है, जैसे – तलाकशुदा पत्नियों के लिए गुजारा भत्ते की मांग (जो कि इस्लाम में मान्य नही है), बच्चों का गोद लेना, स्त्रियों को अपने पतियों को तलाक देने के लिए अधिक उदार नियमों की मांग, बहुपत्नी विवाह पर प्रतिबन्ध तलाक व विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबन्ध तथा सती प्रथा आदि को स्वीकार नहीं करते है लोग अपने अनुभवों का अर्थ ढूँढते है।[11]

समकालीन अन्तराष्ट्रीय संन्दर्भो में कट्टरवाद इस्लाम और आतंकवाद मानव जाति की गंभीरतम समस्या है। क्योंकि विभिन्न देशों में इसके विभिन्न कारण है। कट्टरपंथी इस्लाम राजनीतिक रूप से एक्टिविस्ट विचारधारा है। जिनका अंतिम लक्ष्य एक विश्व व्यापारी समुदाय और मुस्लिम मतावलंबियों का खलीफा तैयार करना है। कट्टरपंथी इस्लाम अन्य धार्मिक परम्पराओं के विश्वासो, प्रथाओं और प्रतीको को नहीं मानता इस असहिष्णु पंथ को इस्लामवादियों द्वारा अपने आतंकवाद के लिए दार्शनिक औचित्य के रूप में उद्धृत किया गया है। धर्म के कट्टरपंथी अनुयायी अपने विश्वास को एक चरम तरीके से देखे तो उनका मानना है कि जो कोई भी उनकी अवधारणा का विरोध करेगा। वह इस्लाम के साथ युद्ध में है और उसके साथ दुश्मन जैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए।

इस्लामी कट्टरपंथी मानते है कि मुस्लिम बहुसंख्यक क्षेत्रों के देशों में शासन के इस स्वरूप को स्थापित करना उनका दायित्व है। और आखिर में पूरी दुनिया में शरीयत को स्थापना कर स्वतन्त्रता और न्याय को बढ़ावा देना है। कुछ मामलों मे, इस्लामी अतिवादी शरिया को लोकतन्त्र के एक उत्कृष्ट रूप के तौर पर भी व्याख्यायित करते है। इस्लामी चरमपंथियों के मध्यवर्ती राजनीतिक लक्ष्य है, इसको लेकर उनका मानना है कि इससे वैश्विक रूप से शरीयत के लागू करने का रास्ता प्रशस्त होगा। इसमें से एक लक्ष्य है मुस्लिम भूमि से गैर मुस्लिम सैन्य बलो को हटाना और शत्रु शासन का नाश करना है इस्लामी चरमपंथियों के कामों में शामिल है आतंकवाद, मानवाधिकारों का हनन, शरिया आधारित शासन को बढ़ावा, गैर मुस्लिम, प्रतिद्वंद्वी मुस्लिम के प्रति कट्टरता और पश्चिम और अन्य लोकतन्त्र के लिए समग्र शत्रुता।[12]

दुनिया भर में यदि कही पर भी आतंकवाद है तो उसके पीछे इस्लाम की सुन्नी विचारधारा के अन्तर्गत वहाबी और सलाफी विचारधार को दोषी माना जाता है इनका मकसद है जिहाद के द्वारा धरती को इस्लामिक बनाना। आतंकवाद अब किसी एक देश या प्रांत की बात नही रह गया है। यह अब अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर गठजोड़ कर चुका है और इसके समर्थन में कई मुस्लिम राष्ट्र और वामपंथी ताकते है। सऊदी, सीरिया, यमन, लेबनान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मलेशिया, इंडोनेशिया और तुर्की जैसे इस्लामिक मुल्क इनकी पनाहगाह है।

इस्लामिक आतंकवाद की समस्या व उसकी जड़ के असली पोषक तत्व सिर्फ सऊदी अरब, चीन, ईरान ही नही हैं। इनके समर्थक गैर–मुस्लिम मुल्कों में वामपंथी, समाजसेवी और धर्म निरपेक्षता की खोल में भी छुपे हुए है। इनके कयी संगठन भी है, जो इस्लामिक शिक्षा और प्रचार–प्रसार के नाम की आड़ में कार्यरत है। अलकायदा, आईएस, तालिबान बोको हराम, हिल्बुल्ला, हमांस, लश्कर ए–तोइबा, जमात–उद–दावा, तहरीक–ए–तालिबान पाकिस्तान, जैश–ए –मुहम्मद हरकत उल जेहाद–ए–इस्लामी, अल– शबाब, हिजबुल मुजाहिदीन, अल उमर मुजाहिदीन, जम्मू–कश्मीर इस्लामिक फ्रुंट, दुख्तरान–ए–मिल्लत और इण्डियन मुजाहिदीन जहां इस्लाम की एक विशेष विचारधारा से सम्बन्ध रखते है वह इस्लामिक मुल्कों को छोड़कर हर देश में कम्युनिस्ट या साम्यवादी विचारधारा की आड़ में भी ये संगठन पल और बढ़ रहे है।[13]

हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी इत्यादि प्रमुख धर्मों के लोगों में कुछ ऐसे विचारधारा के लोग भी सामने आए जो समाज में अपने धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए निम्न प्रयास किए। यह प्रचार शैक्षणिक व्यवस्था के माध्यम से या फिर धर्म परिवर्तन के माध्यम से रहा हो।

धर्मान्तरण किसी ऐसे नये धर्म को अपनाने का कार्य है, जो धर्मान्तरित हो रहे व्यक्ति के पिछले धर्म से भिन्न हो। दुनिया में स्वेच्छा से धर्मान्तरित होने के कम ही सुनने को मिलते है। इतिहास में ईसाई और मुस्लिमों के धर्मयुद्ध के बारे में तो पढ़ने को मिलता है। इसे क्रूसेड और जिहाद कहा जाता है। यह सब कुछ धर्म के विस्तार के लिए ही हुआ था।

पहला क्रूसेड 1096–99 के बीच हुआ इसी दौर जैंगी के नेतृतव में मुसलमान दमिश्क में एकजुट हुए और पहली दफा अरबी भाषा के शब्द 'जिहाद' का इस्तेमाल किया गया जबकि उस दौर में इसका अर्थ संघर्ष हुआ करता था। इस्लाम के लिए संघर्ष नहीं, लेकिन इस शब्द को इस्लाम के लिए संघर्ष बना दिया गया। दूसरा क्रूसेड 1144 ई0 में फ्रांस के राजा लुई और जैंगी के गुलाम नुरूद्दीन के बीच हुआ। 1191 में तीसरे क्रूसेड की कमान उस काल में पोप ने इंग्लैंड यरूशलम पर सलाउद्दीन ने कब्जा कर रखा था।

दुनिया के तीन ऐसे बड़े धर्म है जिनके कारण दुनिया में धर्मांतरण जैसा शब्द अस्तित्व में आया। ये बड़े–धर्म है, बौद्ध, ईसाई और इस्लाम तीनों ही धर्मो ने दुनिया के पुराने धर्मो के लोगो को अपने धर्म में स्वेच्छा से दीक्षित किया। उस काल में इन तीनों धर्मो के सामने थे हिन्दू, यहूदी धर्म के अलावा दुनिया के कयी तमात छोटे और बड़े धर्म।[14]

लव–जिहाद –लव जिहाद का मुद्दा चर्चा मे बना ही रहता है क्योंकि यह किसी राज्य, क्षेत्र या देश का मामला नही है बल्कि यह एक विश्वव्यापी मुद्दा है। जहां पर भी मुस्लिम समाज अल्पसंख्य है वहा की

बहुसंख्यक आबादी अक्सर यह आरोप लगाती रहती है कि मुस्लिम युवक हमारी बेटियों को बहकाकर विवाह कर लेते है, फिर उनका धर्म परिवर्तन करके उन्हें अपने धर्म में शामिल कर लेते है। जहां मुस्लिम बहुसंख्यक है वहा लव जिहाद के मुद्दे को उठाने की हिम्मत कोई कर ही नही सकता इसलिए यह मुद्दा मुस्लिम अल्पसंख्यक आबादी वाले देशों का ही है।

देखा जाए तो लव जिहाद अपने आप में सही शब्द नही है क्योंकि जहां जिहाद होता है वहा लव के लिए कोई जगह नहीं होती और जहां लव होता है वहा जिहाद की कोई जरूरत नहीं है। इस्लामिक धारणा के अनुसार जिहाद पवित्र शब्द हो सकता है लेकिन वर्तमान में जिहाद का मतलब मासूम और निर्दोष महिलाओं, पुरूषों और बच्चों का शोषण–उत्पीड़न तथा वर्बर हत्याएं करना ही है। दुनिया भर में इस्लाम फैलाने के लिए खुलेआम घूम रहे आतंकवादी मासूम लोगों की हत्याएं जिहाद के नाम पर ही कर रहे है।

इसी जिहाद का एक हिस्सा है लव जिहाद। भारत में इसे हिन्दू संगठनों का बेमतलब का हो हल्ला करार दिया जाता है जबकि सच यह है कि इससे कही पहले यूरोप में लड़किया ने यह मामला उठाया है कि उन्हे गलत तरीके से फसांकर शादियां की गयी है और उसके बाद उनका जबरन धर्म परिवर्तन किया गया है। अक्सर इसे हल्के में लिया जाता है और कहा जाता है कि ये कोरी बकवास है जबकि मेरा मानना है कि सच से आंखे चुराने से सच झूठ नही हो जाता है। लव–जिहाद एक ऐसा सच है कि हिन्दू मुस्लिम युवक और युवतियों के बीच होने वाले सारे प्रेम–विवाहो को लव–जिहाद का नाम दिया जा सकता। एक सच यह भी है कि कौन सा प्रेम–विवाह लव–जिहाद नही है। इसकी पहचान करना भी मुश्किल है।

उपरोक्त कुछ ऐसे कार्य थे जिसके परिणामस्वरूप सशक्त बलों की हत्या आम जनमानस के साथ खून–खराबा स्थानीय लोगों का पलायन, शरणार्थियों की संख्या में इजाफा के साथ–साथ कुछ अंतरराष्ट्रीय घटनाएं विश्व भी विचारधारा परिवर्तित करने का प्रयास किया।साल 2001 में 11 सितम्बर को अमेरिका में हुए आतंकी हमले ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया था। इस हमले में अमेरिका का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पूरी तरह से ध्वस्त हो गया था। अमेरिका में हुए इन हमलो के लिए अलकायदा के 19 आतंकवादियों ने चार विमान हाइजैक किये थ। दो विमानों को वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के टावर्स से टकरा दिया। जबकि तीसरे विमान से पेंटागन पर हमला किया गया। एक विमान पेंसिलवेनिया में क्रेस हो गया था। इस हमले को 9/11 हमले का नाम से भी जाना जाता है।

हमले के पीछे था लादेन का हाथ था, जार्जबुश ने तत्कालीन उपराष्ट्रपति डिक चेनी से कहा था 'हम युद्ध के मैदान में है' उन्होंने अपने सहयोगी से आगे कहा 'जब हम गुनहगारों को पकड़ेगे तो वे मुझे पसंद नहीं आयेंगे। उन्हे इसकी भारी कीमत चुकानी होगी।' दिल दहला देने वाले इस हमले के पीछे अलकायदा सरगना ओसामा बिन लादेन का हाथ था। हालांकि, अमेरिका ने इस हमले का बदला लिया और

पाक के एबटाबाद में 2 मई 2011 को अमेंरिकी कमांण्डों ने एक आपरेशन में अलकायदा चीफ ओसामा बिन लादेन को मौत के घाट उतार दिया। इस हमले के बाद अमेरिका ने सुरक्षा नीति में व्यापक बदलाव किये पर आज भी अमेरिका पर आतंकी खतरा कम नहीं हुआ है।

भारत में 26/11—भारतीय इतिहास में मुम्बई पर 26 नवम्बर 2008 को हुआ आतंकी हमले ने पूरे देश को दहला दिया था और इसे काले दिन के रूप में याद किया जाता है। एक साथ मुम्बई में कयी आंतकी हमलो को आंतकवादियों ने अंजाम दिया था। आतंकियों ने ताज होटल, ओबराय होटल, नरीमन हाउस, कामा अस्पताल और सी0एस0टी0 समेत कई जगह पर एक साथ निशाना बनाकर हमला किया था। आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच 60 घण्टे से भी ज्यादा समय तक मुठभेड़ चलने के बाद 160 सें भी ज्यादा लोगो ने अपनी जान खो दी थी। इस हमले के दोषी अजमल कसाब को 2012 में फांसी दी जा चुकी है इस हमले के पीछे पाकिस्तान के आंतकी संगठन लश्कर—ए—तैयबा था।

यूरोप में कट्टरता को कूचलने हेतु किया गया प्रयास —यूरोप इस्लाम के उसे संस्करण का निर्माण करने के लिए भी तैयार है जो उसे सूट करता है जो यूरोप की सुरक्षा के लिए जरूरी है। यूरोप इस्लाम के धर्म गुरूओं और इस्लाम का प्रचार करने वाले लोगो को ट्रेनिंग देने के लिए एक नया संस्थान बनाने पर विचार कर रहा है। कट्टर इस्लामिक आतंकवाद की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए फिलहाल यूरोप ने अपने लिए तीन लक्ष्य तय किये है।

पहला लक्ष्य, अपने—अपने देश के इमामों को ट्रेनिंग देकर उन्हें सर्टिफिकेट देगा। अगर ऐसा हो गया तो यूरोप की मस्जिदों में वही इमाम और मौलवी काम कर पायेगें जिनके पास इसकी ट्रेनिंग और सर्टिफिकेट होगा।

दूसरा लक्ष्य है, इस्लामिक संस्थानों को विदेशों से मिलने वाली फंडिंग को रोकना।

तीसरा लक्ष्य है कि 'यूरोप के खुले बार्डस को बन्द करना या फिर इन बार्डस से गुजरने वाले लोगो की गहन जांच करना।

यूरोपियन यूनियन में 27 देश है और इनमें से ज्यादातर देशों में एक ही मुद्रा चलती है और इन सभी देशो के बीच मुक्त व्यापार भी होता है। लेकिन अब यूरोप के देश आतंकवाद के खिलाफ कोई संयुक्त नीति नही बना पाये है। हालांकि अब इस स्थिति को बदलने की कोशिश हो रही है। यूरोप के सामने इस समय कोरोना वायरस को सेकेण्ड वेव की चुनौती है। लेकिन इस सब के बीच आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई यूरोप के लिए प्राथमिकता बन गयी है और मौलवियों को ट्रेनिंग देने से लेकर बार्डस बंद किये जाने तक पर विचार किया जा रहा है।

लेकिन क्या इस्लामिक कट्टकर पंथ के खिलाफ यूरोप की ये लड़ाई इस्लामिक आतंकवाद को रोक पायेगा। वर्ष 2001 में अमेरिका में हुए 9/11 के हमलो के बाद तत्कालीन राष्ट्रपति जार्जबुश ने आतंकवाद के खिलाफ एक वैश्विक लड़ाई की घोषणा की थी लेकिन 20 साल के बाद भी आतंकवाद को दुनिया से खत्म नही किया जा सका है इसलिए सवाल ये है कि क्या यूरोप कर पायेगा।

विश्व में विभिन्न क्रांतियां, लोगों को स्वतंत्रता, समानता, अभिव्यक्ति की आजादी और गुलामी की बेड़ियां तोड़ने के लिए हुई। प्रजातंत्र से मुक्ति पाने का प्रयास हुआ। इन क्रांतियों ने लोगों को सुखद एहसास भी कराया। इस आजादी ने लोगों के जीवन में परिवर्तन कराने का भी काम किया और लोग आनंदित भी हुए, लगता है स्वतंत्रता की चाह में अब समाज का झुकाव स्वच्छंदता की तरफ बढ़ रहा है।

---

[1]रावत हरिकृष्ण, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश– पेज 93

[2]शर्मा के0 एल0,भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन –पेज 25

[3]मुकर्जी रवीन्द्र नाथ, सामाजिक विचारधारा– पेज 382.83

[4]दोषी एस0एल0, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त – 389.90

[5]दोषी एस0एस0, त्रिवेदी एम0एस0, उच्चत्तर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त –
पेज 68, 117.18

[6]सिंह जे0पी0, समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त –434.35, 461

[7]वर्ल्ड फोकस पत्रिका –अप्रैल 2017

[8]www.hindi.webdunia.com

[9]www.hindi.webdunia.com

[11]https://m.uttamhindu.com- लव जिहाद

[12]https://www.amarujala.com. - अमेरिका पर आतकी हमला

[13]https://www.newsnation.com 9/11 हमला मुम्बई।

[14]https://zeenews.india.com.DNA ANALSIS - कट्टरपंथ के खिलाफ यूरोप का नयाफार्मूला।

दैनिक जागरण, संस्तरण वाराणसी, पृ. संपादकीय

हिंदुस्तान , संस्तरण वाराणसी, पृ. संपादकीय